IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"नगरीकरण एवं बंगाली समुदाय ,समस्याएँ और चुनौतियाँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(उधम सिंह नगर के सितारगंज तहसील के 50 पुरुषों के विशेष संदर्भ में)"

उत्तम हालदार शोधार्थी (समाजशास्त्र)

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर, उत्तराखण्ड

सारांश

गांव से नगर बनने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहा जाता है। नगरीकरण का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जनसंख्या के घनत्व में वृध्दि ही नगरीकरण का प्रतिमान नही है वरण वहां के सामाजिक व आर्थिक सम्बन्धो में परिवर्तन, अनौपचारिक सम्बन्धों का औपचारिक सम्बन्धों में परिवर्तन, प्रथमिक समूहों का द्वितीय समूहों में परिवर्तन भी नगरीकरण का प्रतिमान है। जो पहले से ही नगर है उन्हें नगरीकरण नही कहा जा सकता ,नगरीकरण का तात्पर्य उन स्थानों से है जहाँ नगर बनने की प्रक्रिएं चल रही हो। आधुनिक नगरीय भौतिक संस्कृति ने अभौतिक संस्कृति से जुड़ी मान्यताओं, विश्वासों, मूल्यों, आदर्शों, परम्पराओं आदि के स्वरूप को बदल दिया है। सामूहिक मूल्यों के स्थान पर वैयक्तिक मूल्यों व स्वार्थों का जन्म हुआ। नगर भौतिक सुख और महत्वाकांक्षाओं का केन्द्र बन गया। यहाँ के आकर्षण ने नगर की जनसंख्या में जहाँ अत्यधिक वृद्धि की है वहीं असंख्य समस्याओं को भी जन्म दिया है। यहाँ जाति–जाति में, वर्ग–वर्ग में, सम्प्रदाय–सम्प्रदाय में संघर्ष और प्रतिस्पर्षायें दिखती हैं वहीं दूसरी ओर भुखमरी, बेरोजगारी, अवासिये समस्या, असंख्य विमारियाँ, बढ़ते हुए अपराध आदि ने व्यक्ति के जीवन को दुरुह बना दिया है। वास्तव में नगर सुविधाओं का नहीं वरन समस्याओं के केन्द्र बन गये हैं। यहां सब कुछ बनावटी है। न पानी शुद्ध मिलता है और न खाना और न स्वच्छ हवा है। सम्पूर्ण नगर का वातावरण प्रदूषित हो गया है। यहाँ प्रेम–स्नेह, लगाव स्वपन की चीजें हो गई हैं। यहाँ व्यक्ति को मिलते हैं तनाव, बिमारियाँ, और मिलती है औपचारिकता जो व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता नहीं उनमें अलगाव उत्पन्न करता है। एकता और सौहार्द की भावना केवल नेताओं के भाषणों में झलकता है जबकि वही इस समस्यायों के जन्मदाता है। ये समस्यायें व्यक्ति को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। ये नगर के आर्थिक–सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक ढ़ाचें, संगठन व संस्थाओं को परिवर्तित करती हैं। उनके स्वरूप को नया रूप प्रदान करती है जिससे अनेक प्रकार के समस्याओं का प्रादुर्भाव होता है।

प्रमुख शब्द: नगरीकरण, ग्रामीण से शहरी प्रवासन, आर्थिक–सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक।

परिचय

उत्तराखंड में बांग्लादेशियों की बसावट को समझने के लिए सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि 1960 के दशक में संयुक्त पाकिस्तान में क्या हुआ था। 27 दिसंबर 1964 को, श्रीनगर में हजरतबल तीर्थस्थल से बालों का एक गुच्छा (जिसे कई लोग पैगंबर मुहम्मद का मानते थे) गायब हो गया। गैर–मुसलमानों के खिलाफ व्यापक गुस्सा और नकारात्मक भावना थी और धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ पूरे पाकिस्तान में प्रदर्शन हुए। निर्णायक मोड़ खुलना नामक स्थान पर हुआ विरोध प्रदर्शन था, जहाँ हिंदुओं को ''खत्म'' करने के नारे लगाए गए थे। खुलना में एक बंद बुलाया गया और अब्दुस खान नामक एक प्रमुख नेता ने उग्र हिंदू विरोधी भाषण दिया। इसके बाद, युवकों की भीड़ पास के हिंदू बहुल इलाकों में चली गई और उनके प्रतिष्ठानों को आग लगाना शुरू कर दिया। खुलना में अगले कुछ हफ्तों तक बड़े पैमाने पर आगजनी, लूट और बलात्कार जारी रहे। यह यहीं नहीं रुका, यह पूर्वी–पाकिस्तान के अन्य क्षेत्रों जैसे ढाका, नारायणगंज और मैमनसिंह तक फैल गया। पूर्वी–पाकिस्तान की सरकार ने दमनकारी उपाय अपनाए और एक अध्यादेश पारित किया जिसने गैर–मुसलमानों की अचल संपत्तियों की बिक्री पर रोक लगा दी। मुझे बताया गया कि इस सब के बाद अल्पसंख्यकों के सामने एकमात्र विकल्प भारत भाग जाना था। इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली भारत सरकार ने पूर्वी–पाकिस्तान शरणार्थियों को नागरिकता और भूमि उपयोग के अधिकार के संदर्भ में वित्तीय सहायता दी। चूंकि सीमित संसाधनों के कारण पश्चिम बंगाल राज्य अत्यधिक बोझिल था, इसलिए पूर्वी–पाकिस्तान शरणार्थियों को देश के विभिन्न हिस्सों जैसे उत्तर प्रदेश (उत्तराखंड एक राज्य के रूप में केवल वर्ष 2000 में बनाया गया था) और महाराष्ट्र में पुनर्वासित किया गया था। प्रत्येक बसने वाले को छह एकड़ भूमि उपयोग का अधिकार दिया गया। उत्तराखंड राज्य 2 लाख से अधिक बंगालियों की मेजबानी करता है आज, उनमें से अधिकांश गरीबी से जूझ रहे हैं और प्रतिदिन 1 डॉलर से भी कम कमाते हैं। यह उधम सिंह नगर जिले के सितारगंज नामक स्थान के दौरे पर आधारित है, जहां लगभग 20,000 बंगाली रहते हैं। मैं इस लेख में उनके मुद्दों, भय और चिंताओं का विश्लेषण करता हूं।

नगरीकरण की पृष्ठभूमि

मेसोपोटामिया और मिस्र के शुरुआती शहरों के विकास से लेकर 18वीं शताब्दी तक, निर्वाह में लगी आबादी के विशाल बहुमत के बीच संतुलन मौजूद था,ग्रामीण संदर्भ में कृषि, और शहरों में आबादी के छोटे केंद्र जहां आर्थिक गतिविधि में मुख्य रूप से बाजारों में व्यापार और छोटे पैमाने पर निर्माण शामिल था। इस अवधि के दौरान कृषि की आदिम और स्थिर स्थिति की वजह से ग्रामीण व शहरी आबादी का अनुपात एक निश्चित संतुलन पर उल्लेखनीय वृद्धि देखी जा सकती है मुगलकालीन भारत, जहां 16वीं–17वीं शताब्दी के दौरान इसकी 15% आबादी शहरी केंद्रों में रहती थी, उस समय के यूरोप से अधिक नगरीकरण तेजी से पश्चिमी दुनिया भर में फैल गया और 1950 के दशक के बाद से इसने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है अफ्रीका और एशिया में भी पकड़ बना लिया। सितारगंज एक तहसील भी है. उधमसिंह नगर जिले के पूर्वी भाग में स्थित इस तहसील का मुख्यालय सितारगंज नगर में ही स्थित है. इसके पूर्व में खटीमा तहसील, पश्चिम में किच्छा तहसील, उत्तर

में नैनीताल जनपद की हल्द्वानी तहसील और दक्षिण दिशा में उत्तर प्रदेश राज्य का पीलीभीत जिला पड़ता है, सितारगंज भारत के उत्तराखंड राज्य के उधम सिंह नगर जिले में एक शहर और एक नगरपालिका बोर्ड है। अब यह एकीकृत औद्योगिक एस्टेट सितारगंज (IIE) का घर है जिसे उत्तराखंड राज्य औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड (SIDCUL) द्वारा विकसित किया जा रहा है। नगरीकरण ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में आबादी के बदलाव को संदर्भित करता है,

नगरीकरण की कुछ विशेषताएं

संरचित सुविधाएं: किसी भी शहरी केंद्र में, संरचनाओं को मुख्य रूप से डिजाइन किया जाता है ।

आवासीय– 60% औद्योगिक–4%वाणिज्यिक– 2%सड़कें – 18% प्रशासन– 4% मनोरंजक –10% अन्य –2% कुल –100%। आवासीयः आवासीय क्षेत्र किसी भी भूमि उपयोग के उच्चतम प्रतिशत पर कब्जा कर लेता है ।

रोजगार केंद्र – उद्योग, वाणिज्यिक और प्रशासनः किसी भी समुदाय की ऊर्जा औद्योगिक, वाणिज्यिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में पाई जाती है। ये बड़े रोजगार के केंद्र हैं। संचार **नेटवर्कः** संचार लिंकेज का नेटवर्क शहरी क्षेत्रों की संरचना को एक प्रणाली के रूप में एक साथ जोड़ता है।

सड़कें: सड़कों और परिवहन प्रणाली का कुशल नेटवर्क मानव और वाहनों के आवागमन के मुक्त प्रवाह और दक्षता को बढ़ाता है। संकीर्णध्अनियमित सड़क पैटर्न अराजकता और भीड़ लाता है। पर्याप्त झटकों के साथ विस्तृत सड़क आरक्षण पर्याप्त लेन और बुनियादी ढांचे की स्थापना के लिए जगह प्रदान करता है।

आधारभूत सुविधाएं: शहरी केंद्र में बुनियादी सुविधाएं जैसे पानी की आपूर्ति, बिजली, टेलीफोन और ठोस अपशिष्ट निपटान आदि आम हैं।

आकारः एक नियम के रूप में, एक ही देश में और एक ही अवधि में, शहरी समुदाय का आकार ग्रामीण समुदाय की तुलना में बहुत बड़ा होता है। इसलिए, नगरीकरण और इसके आकार का सकारात्मक संबंध है।

अध्ययन के उद्देश्य

1– बंगाली समुदाय के सामाजिक, आर्थिक पृष्टभूमि को ज्ञात करना।

2– बंगाली समुदाय के वर्तमान पारिवारिक स्थिति पर नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धतिशास्त्र

समाजशास्त्रीय अध्ययन भी सामाजिक अनुसंधान पर आधारित होता है, जिसमें अध्ययन क्षेत्र का चयन अति महत्वपूर्ण है, जो न तो अधिक सीमित और न ही अधिक विस्तृत होना चाहिए। इसलिए अध्ययन क्षेत्र के लिए उत्तराखण्ड के सितारगंज शहर को चुना गया है। चूंकि समग्र का विस्तार शहर के शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण अंचल तक है, लेकिन शोध हेतु अध्ययन को सितारगंज शहर पर ही केन्द्रित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में परिवार समग्र से प्रतिनिधि इकाइयों के चयन हेतु निदर्शन विधि के उपयोग को अनिवार्य माना गया है। इसलिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के द्वारा सितारगंज शहर में कार्यरत बंगाली समुदाय को पुरुषों को दो श्रेणियों (सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र) में विभाजित करके अध्ययन किया गया है। तत्पश्चात् दैव निदर्शन की लॉटरी पद्धति द्वारा दोनों श्रेणियों के 50 बंगाली

पुरुषों (25 सार्वजनिक क्षेत्र एवं 25 निजी क्षेत्र) को अध्ययन हेतु चुना गया है। इसके पश्चात् उत्तरदाताओं से शोध प्रश्नावली की सहायता से अवलोकन आदि प्रविधियों द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृ ति मूलतः आनुभविक है। वर्तमान शोध अध्ययन के उद्देश्यों का विश्लेशण करने हेतु प्राथमिक सूचनाओं के साथ–साथ द्वितीयक सूचनाओं या तथ्यों का उपयोग भी अनुसंधान के निश्कशों की प्राथमिकता को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण माना गया है। बंगाली समुदाय की पुरुषों के सामाजिक जीवन से संबंधित तथ्यों को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा और अधिक प्रदर्शित किया जा सकता है–

बंगाली समुदाय की सामाजिक स्थिति

समाजशास्त्र के अन्तर्गत किसी भी समुदाय के अध्ययन में उस समुदाय के सामाजिक संगठन के विभिन्न घटकों का अध्ययन अति महत्वपूर्ण होता है। इससे उस समुदाय की सामाजिक स्थिति का आकलन भी सरल हो जाता है। प्रत्येक समाज के अध्ययन में व्यक्ति एवं समाज के मध्य अन्तर्सम्बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा प्रकारान्तर से यही सम्बन्ध समाज के संगठन का आधार बनते हैं। व्यक्ति और समाज के मध्य अन्तर्सम्बन्धों के आधार पर ही अरस्तू ने मनुष्य को 'सामाजिक प्राणी के रूप में परिभाषित किया। सामान्यतः सामाजिक संगठन का आधार परिवार जाति, अन्तसामुदायिक संबंध, अन्तर्वैयक्तिक संबंध, अन्तर्जातीय संबंध, पुरुषों की स्थिति, रहन–सहन का स्तर आदि पर आधारित होता है। इस अध्ययन में सितारगंज शहर में अवस्थित बंगाली समुदाय के पुरुषों की सामाजिक स्थिति के अध्ययन हेतु उनकी परिवार की संरचना एवं स्वरूप तथा आकार आदि की वास्तविक स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है, जिसका विवरण निम्नवत है–

परिवार

प्रत्येक सामाजिक संगठन में परिवार की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस संबंध में किंग्सले डेविस ने परिवार को मानव की सबसे उत्कृष्ट खोज एवं उपलब्धि माना है। विश्व के प्रत्येक समुदाय में परिवार ही आधारभूत इकाई है। इसी परिवार में व्यक्ति जन्म लेता है, व्यवहार के तरीके सीखता है, जो अन्ततः उसे सामाजिक प्राणी बनाता है। यद्यपि यह सत्य है कि भिन्न–भिन्न समुदायों एवं संस्कृतियों में परिवारों का स्वरूप अलग–अलग हो सकता है। विशेष रूप से भारतीय परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण क्षेत्र में परम्परागत रूप से संयुक्त परिवारों का वर्चस्व रहा है, जो संभवतः कृषक प्रधान समाज की आवश्यकता अथवा परिणाम रहा प्रस्तुत अध्ययन में बंगाली समुदाय की कपुरुषौं भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। सितारगंज शहर के बंगाली समुदाय की पुरुषों की परिवार संरचना परिवर्तन की ओर अग्रसर है। बंगाली समुदाय के परिवार संरचना में संयुक्त परिवार व्यवस्था का विघटन हो रहा है। जिसका स्थान अब एकाकी परिवार व्यवस्था लेने लगी है। यद्यपि यह भी सत्य है कि पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति आज भी संयुक्त परिवार को उपयोगी मानते हैं, किन्तु नयी पीढ़ी मुख्यता एकाकी परिवार की पक्षधर है। बंगाली समुदाय के पुरुषों में परिवार संरचना के स्वरूप संबंधी तालिका निम्नलिखित है–

तालिका संख्या–01

बंगाली समुदाय के पुरुषों में परिवार संरचना का स्वरूप

क्रम संख्या	परिवार संरचना का स्वरूप	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त	15	30
2	एकांकी	35	70
3	योग	50	100

तलिका संख्या–01 से स्पष्ट होता है कि रंगाली समुदाय के पुरुषों में 30 प्रतिशत के परिवार संयुक्त तथा 70 प्रतिशत का एकाकी स्वरूप के है। यह परिवार–सत्यना के स्वरूप में हो रहे विघटन का चातक है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवारों का प्रतिशत एकाकी परिवारा की तुलना में कम है। जो इस वृथ्य का द्योतक है कि संयुक्त परिवार परिवर्तित हो रहा है। परम्परागत परिवार संरचना में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए है और वह संक्रमण काल से गुजर रहा है। नवीन परिस्थितियों के कारण संयुक्त परिवार में होने वाले परिवर्तनों को बंगाली समुदाय के पुरुषों के कुछ सदस्यों ने विघटन माना है, तो कुछ ने इसे स्वरूप परिवर्तन ही है– कहा है।

परिवार का आकार

वर्तमान समय में परिवार का आकार अर्थात् सदस्य संख्या घटती जा रही है। अब सीमित परिवार की ओर लोगों का झुकाव बढ़ता जा रहा है। परिवार नियोजन से संबंधित विभिन्न विधियों के प्रयोग ने भी कुछ हद तक परिवारों की सदस्य संख्या को घटाने में योग दिया है। बंगाली समुदाय के पुरुषों में अधिकतर उत्तरदाता अपने परिवार का आकार छोटा रखने के पक्ष में ही दिखाई देते हैं। बंगाली समुदाय के पुरुषों में परिवार के आकार को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

तालिका संख्या–02

बंगाली समुदाय के पुरुषों में परिवार का आकार

क्रम संख्या	परिवार का आकार	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	छोटा (01–04 सदस्यों वाला)	25	50
02	मध्यम (05–07 सदस्यों वाला)	15	30
03	बड़ा (07 सदस्यों से अधिक)	10	20
04	**योग**	**50**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बंगाली समुदाय के पुरुषों में 50 प्रतिशत उत्तरदाता छोटे परिवार से सम्बद्ध है। इन परिवारों की सदस्य संख्या 01 से 04 तक है। 05–07 सदस्यों तथा 07 से अधिक सदस्यों वाले परिवारों की संख्या का प्रतिशत क्रमशः 30 एवं 20 है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस समुदाय में अब अधिकांश परिवार छोटा एवं मध्यम (कुल 80 प्रतिशत) आकार के हैं। बड़े परिवार मात्र 20 प्रतिशत ही है। अध्ययन में यह तथ्य भी प्रकाश में आया है कि अतीत में अधिकांश परिवार बड़े आकर के ही होते थे किन्तु अब नगरीकरण के प्रभाव के कारण परिवार के आकार में बदलाव आ रहा है।

वर्तमान आर्थिक स्थिति

किसी भी सामाजिक परिवेश में आर्थिक स्थिति का सीधा सम्बन्ध मानव के जीवन–धारण के लिए आवश्यक साधनों से होता है। परिवार का समस्त पहलू आर्थिक स्थिति से संबन्धित माना जाता है। परिवार की आर्थिक स्थिति से आय तथा व्यय आदि का आकलन होता है।

यही कारण है कि समाज के आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं कार्ल मार्क्स का कथन है कि 'आदमी जिन्दा रहेगा, फिर कहीं वह इतिहास या समाज का निर्माण कर सकेगा और जिन्दा रहने के निये उसे भोजन, कपड़ा व मकान की आवश्यकता होगी। वर्तमान समय में आर्थिक स्थिति की क्रियाशीलता के कारण उत्तरदाताओं की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं। नए–नए सेवा के अवसरों के प्राप्त होने के कारण अब उत्तरदाता धीरे–धीरे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती जा रही है। जिनके कारण परिवार तथा समाज में उनकी स्थिति ऊँची हो रही है। बंगाली समुदाय के पुरुषों से वर्तमान आर्थिक स्थिति के बारे में पता लगाने की कोशिश की गई, तो उसके भिन्न–भिन्न प्रत्युतर आए जो निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पट है–

तालिका सं०–03

उत्तरदाताओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति

क्र0 सं0	वर्तमान आर्थिक स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	अच्छा	20	40
02	पहले की अपेक्षा आंशिक बेहतर	18	36
03	साधारण	10	20
04	निम्न अथवा दयनीय	02	04
05	योग	50	100

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि बंगाली समुदाय के कार्यशील पुरुषों में 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति अच्छी है, जबकि 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं की लहले की अपेक्षा आंशिक बेहतर है। इसके पश्चात 20 प्रतिशत आंशिक है। उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति साधारण हैं। सबसे कम 04. प्रतिशत उत्तदाताओं

की आर्थिक स्थिति निम्न अथवा दयनीय है। तथ्यों के अवलोकन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है, जिनकी आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा आंशिक बेहतर है। इसका कारण यह है कि पूर्व के आय की तुलना में वर्तमान आय अधिक है। आर्थिक स्थिति उसी व्यक्ति की बेहतर होती है, जिसके आय और व्यय का संतुलन बना रहता है। अच्छा और साधारण आर्थिक स्थिति वाले भी उत्तरदाता काफी हैं, जिनके आजीविका के प्रमुख साधन तथा आय के स्तर में काफी अन्तर नहीं है। निम्न अथवा दयनीय आर्थिक स्थिति वाले भी उत्तरदाता है, लेकिन इनकी संख्या

मासिक आय की सीमा

किसी भी समाज व परिवार के आर्थिक स्थिति के आकलन में मासिक आय की सीमा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी आधार पर उस समाज व परिवार के आर्थिक स्थिति का निर्धारण होता है। यदि किसी समाज (परिवार) व शहर के सदस्यों तथा निवासियों आय की सीमा अधिक है, तो स्वाभाविक रूप से उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। बंगाली समुदाय के पुरुषों के मासिक आय की सीमा में आनुपातिक भिन्नता है, जिसे निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पश्ट किया जा सकता है–

तालिका सं0–04

बंगाली समुदाय के पुरुषों के मासिक आय की सीमा

क्र० सं०	मासिक आय की सीमा	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
01	रू. 10,000 तक (निम्न आय वर्ग)	04	08
02	रू0 10,000–15,000 तक (उच्च मध्यम आय वर्ग)	12	24
03	रू0 15,000–20,000 तक (उच्च आय वर्ग)	24	48
04	रू0 20,000 से अधिक (उच्चतम आय वर्ग)	10	20
05	**योग**	**50**	**100**

तालिका संख्या–04 से विदित होता है कि सर्वाधिक 48 प्रतिशत कार्यशील पुरुषों के मासिक आय की सीमा रु० 15,000–20,000 तक है। इसी कारण इन्हें उच्च आय वर्ग की श्रेणी में शामिल किया गया है. क्योंकि इन उत्तदाताओं के परिवार का भरण–पोषण सही ढंग से हो पाता है। इसके पश्चात् 20 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मासिक आय रू0 20.000 से अधिक है, इन्हें उच्चतम आय वर्ग में रखा गया है। इन्हें अपने परिवार का आजीविका चलाने में कठिनाई महसूस नहीं होती है 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं को 10.000–15,000 तक तक के मासिक आय की श्रेणी में रखकर इन्हें उच्च मध्यम आय वर्ग पोशित किया गया है। इनके पारिवारिक सदस्यों का पालन–पोशण बेहतर ढंग से होता है। 08 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मासिक आय की सीमा 0 10,000 सका है, और इन्हें निम्न आय वर्ग की श्रेणी में शामिल किया गया है। इनके परिवार के सदस्यों का भरण–पोषण थोड़ा बेहतर ढंग से नहीं होता है. इन्हें कोई आर्थिक तंगी का सामना भी करना पड़ता है।

पूर्ण नागरिक लेकिन अधिकार और लाभ आधे

जिन शरणार्थियों को पश्चिम बंगाल में नागरिकता दी गई, वे भाषा और संस्कृति में समानता के कारण स्थानीय व्यवस्था में समाहित हो गए। जिन लोगों को उत्तराखंड जैसे देश में कहीं और पुनर्वासित किया गया, उन्हें एक समस्या का सामना करना पड़ाः वे उन लाभों का आनंद नहीं ले सके जो उनके हिंदी भाषी पड़ोसियों को मिलते थे। मैं नमशूद्रो जाति के एक जोड़े और उनके परिवार से मिला। टूटी–फूटी हिंदी में, उनके बेटे ने मुझसे कहा, ‘‘अगर हम पश्चिम बंगाल में रहते तो हमको आरक्षण मिल जाता और इधर हमको कुछ नहीं‘‘ यानी कि अगर वे पश्चिम बंगाल में रहेंगे तो आरक्षण के हकदार होंगे और उत्तराखंड में नहीं रहेंगे। उधम सिंह नगर जिले में अधिकांश बंगाली नागरिक पिछड़ी जाति से आते हैं। हालाँकि, वे आरक्षण के हकदार नहीं हैं क्योंकि स्थानीय सरकार उनकी जातियों को मान्यता नहीं देती है। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में मतुआओं को अनुसूचित जाति (एससी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन उत्तराखंड में उन्हें समान दर्जा नहीं दिया गया है।

भाषाई पहचान खोने का डर

1967 में उत्तराखंड आए पहली पीढ़ी के एक शरणार्थी ने कहा, ‘‘हम बांग्ला लिख भी लेते हैं और पैड भी लेते हैं, पर हमारा बच्चा लोग नहीं पढ़ पाते।‘‘ इसका शाब्दिक अनुवाद है ‘‘मैं बंगाली पढ़ और लिख सकता हूं, लेकिन मेरे बच्चे नहीं पढ़ सकते।‘‘यह जितना सरल लग सकता है, यह एक सामान्य भावना और चिंता है जो उस क्षेत्र में पाई जाती है जहां वे रहते हैं। इन शरणार्थियों के बच्चे जो पूरी तरह से भारत में पैदा हुए और पले–बढ़े, उनके पास अपनी भाषा में पढ़ना–लिखना सीखने के लिए कोई संसाधन नहीं हैं। जिस स्कूल में वे पढ़ते हैं, उसके प्रभाव के कारण उनमें से अधिकांश बंगाली और हिंदी का मिश्रण बोलते हैं। स्थानीय शैक्षणिक संस्थान उस क्षेत्र में संख्यात्मक श्रेष्ठता के बावजूद छात्रों को बंगाली भाषा को एक विषय के रूप में पेश नहीं करते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध बंगाली समुदाय के पुरुषों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर आधारित है, जोकि उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर जिले के तराई क्षेत्र को सितारगंज शहर से सम्बन्धित है। अध्ययन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि सितारगंज शहर में अवस्थित बंगाली समुदाय के पुरुषों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन कैसा है? और उनकी समाज में क्या स्थिति है तथा यह किस प्रकार से समाज में अपने सामाजिक जीवन को व्यतीत कर रहे हैं? तथा अपनी आजीविका के लिए किस प्रकार से प्रयासरत हैं। आज विश्व के अधिकांश समुदायों में कान्तिकारी परिवर्तन हो गया है किन्तु बंगाली समुदाय आज भी अपने समुदाय में बहुत अधिक परिवर्तन नही कर पाया है। वर्तमान समय में बंगाली समुदाय के पुरुषों में परिवर्तन की आधुनिक प्रक्रियाओं–वैश्वीकरण,नगरीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, औद्योगिकरण एवं भौतिकावादी विचारधारा, आर्थिक स्वतंत्रता तथा वैधानिक व्यवस्थाएँ व राजनीतिक चेतना आदि के फलस्वरूप अपने अस्तित्व का बोध हुआ और यह परिवर्तन दो रूपों में देखने को मिला। प्रथम चरण में बंगाली समुदाय की स्थिति को समाज में ऊँचा उठाने का प्रयास, द्वितीय चरण में बंगाली समुदाय के आर्थिक पक्ष में सुधार करने का भरपूर प्रयास किया गया। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में बंगाली समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

पर पड़ने वाले वर्तमान प्रभाव को सामाजिक दृष्टिकोण से समझाने का प्रयास किया है। समस्या पर पूर्ण प्रकाश डालने हेतु शोध के लिए उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर जनपद के अन्तर्गत सितारगंज शहर का चयन किया गया। इस शोध कार्य में 50 बंगाली समुदाय के पुरुषों को निदर्श इकाइयों के रूप में चुनकर अध्ययन किया गया, जो समग्र का प्रतिनिधित्व करती हैं। अध्ययन में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक स्रोतों का उपयोग किया गया। तथ्य एकत्रीकरण के बाद उनकी वर्गीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण किया गया है। और सबसे अन्त में अध्ययन के आधार पर यर्थाथ निष्कर्षो व सुझाओं का प्रतिपादन किया गया है, जो काफी सीमा तक सामाजिक अध्ययन से प्राप्त है।

इस शोध कार्य के अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि. बंगाली समुदाय की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा बेहतर है, जिस वजह से यह उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर जनपद के तराई क्षेत्र के सितारगंज शहर में अपनी स्थिति को बेहतर बनाये हुए हैं। इस शोध कार्य के परिणाम में बंगाली समुदाय के पुरुषों में एक माँग बहुत देखने को मिली, पश्चिम बंगाल में रहते तो हमको आरक्षण मिल जाता और इधर हमको कुछ नहीं'' यानी कि अगर वे पश्चिम बंगाल में रहेंगे तो आरक्षण के हकदार होंगे और उत्तराखंड में नहीं रहेंगे। उधम सिंह नगर जिले में अधिकांश बंगाली नागरिक पिछड़ी जाति से आते हैं। हालाँकि, वे आरक्षण के हकदार नहीं हैं क्योंकि स्थानीय सरकार उनकी जातियों को मान्यता नहीं देती है। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में मतुआओं को अनुसूचित जाति (एससी) के रूप में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन उत्तराखंड में उन्हें समान दर्जा नहीं दिया गया है। जोकि इस प्रकार है कि उन्हें पश्चिम बंगाल के जी०ओ० के अनुसार उत्तराखण्ड में भी अनुसूचित जाति का दर्जा मिले जिससे कि इनकी आने वाली पीढ़ी की सामाजिक एवं आर्थिक स्थति वर्तमान की अपेक्षा और अधिक बेहतर हो सके।

सन्दर्भ :

1- नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन (एनएलएम) (2014)।

2- द इकोनॉमिस्ट (2012) ''अर्बन लाइफः ओपन–एयर कंप्यूटर''।

3- अब्राहम एराली (2007),द मुगल वर्ल्डः लाइफ इन इंडियाज लास्ट गोल्डन एज, पी।

4- पाओलो मालनिमा (2009)। पूर्व–आधुनिक यूरोपीय अर्थव्यवस्थाः एक हजार वर्ष (10वीं–19वीं शताब्दी)। ब्रिल पब्लिशर्स। पी। 244.

5- विश्व आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण (डब्ल्यूईएसएस) (2013) विश्व आर्थिक और सामाजिक मामले। जुलाई2013।

6- Ahuja Ram- & Indian Social system, Rawat Publications, Jaipur and New Delhi, 1993, P-No-01&19.

7- Goode, W-J-& Methods in Social Research, Megraw Hill & Hatt,P-K- Internationl, Auckland,1983- P-No-01&39.

8- Kumar,Anchalesh-& Working Women and Role Conflict :A Sociological Study (With Special Reference to the Nainital City of Uttarakhand) Completed Resarch Project of ICSSR,New Delhi& 2011,P-No-02&27.

9- Kumar, Anchalesh Globalization and Family& Structure :The Changing Family& Structure of the Bengali Community of the Tarai Region of Uttaranchal: A Sociological Study: Published Ph-D- Thesis, Kumaun University& Page No- 01&49- Nainital, 2007.

10-Kapoor,P Marriage and Working Women in India, Vikash Publications, Delhi, 1970, P-No-03& 17.

11- Raj Gopal- Study of Middle Class Working Women in India] Indian Journal of Social Work,Bombay, 1972, P-No- 14&27.